an>

Title: Need to confer awards in the names of martyrs who laid down their lives for the country.

**श्री भगवंत मान (संगरूर):** माननीय सभापति जी, मैं एक ऐसे मुद्दे भारत रत्न पर बोलना चाहता हूं जो आजकल सुर्खियों में है। हमारे देश के जो बहुत बड़े बड़े अवाड्र्स हैं, उनका राजनीतिकरण हो रहा है। बहुत राजनीतिज्ञ लोग या तो उसके लिए रिकमेंड करते हैं या उनके नाम भी आ रहे हैं। असल में इससे ये अवाड्र्स विवादों में घिर जाते हैं। भारत रत्न अवार्ड की जो बात चल रही है, उसकी गरिमा भी इससे कम हो जाती है। मैं चाहता हूं कि हमारे देश में बहुत से ऐसे रत्न हैं जो असल में भारत के असली रत्न हैं जिन्होंने हमें भारत लेकर दिया। जिनमें शहीद भगत सिंह जी हैं। शहीद करतार सिंह सरापा और शहीद ऊधम सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, रामप्रसाद बिसमिल जैसे लोग हैं जिन्होंने देश के लिए अपनी जान दी। भगत पूर्ण सिंह हैं जिन्होंने मानवता के लिए पिंगवाड़ा नाम की संस्था बनाकर बहुत सेवा की। अगर इनको अवार्ड नहीं भी मिलेगा तो इनकी शहीदी कम नहीं होने वाली लेकिन अवार्ड ऐसे व्यक्तियों को मिलना चाहिए जिनको अवार्ड देकर अवार्ड की गरिमा और ऊंची हो। भगत सिंह जैसे जो शहीद हमारे दिलों में बसते हैं। इनको अगर अवार्ड मिलते हैं तो इससे भारत रत्न की गरिमा ऊंची होगी। भारत रत्न के लिए पात्र चुने जाने का क्या क्राईटीरिया है? कौन चैक करता है कि किसको देना है? मैं कहना चाहूंगा कि जैसे हमारी स्टैंडिंग कमेटीज बनती हैं, उसके लिए भी एक कमेटी हो जो ब्यूरोक्रेटिक भी न हो और सरकारी भी न हो। अलग अलग वर्गों से लोग लिये जाएं ताकि आजकल सूचना और तकनीकी के क्षेत्र में इतनी तरक्की हो गयी है कि आप लोगों से पूछ भी सकते हैं कि कौन अवार्ड का हकदार है? मैं चाहता हूं कि भारत रत्न जैसे अवार्ड देश के शहीदों के नाम होने चाहिए और इसके लिए एक स्टैंडिंग कमेटी होनी चाहिए।